‘दिवंगत पिता के लिये’

वही मैदान !
घास और ज़मीन की वह पुरानी चटियल पहचान ।
ऐसे ही होती आई है साल दर साल ।

ओ छतनार शहतूत के वृक्ष!
आज उस पहचान में कुछ अलग है,
तो तुम्हारा न होना ।

वे मीठे फल तुम्हारी छाया में डोलती चौड़ी कीत पहने, कड़क
आवाज़ वाली मोटी मालिन,
हम लौट गये हैं कहीं ।

भूमते पेड़, नाचते मोर और चिढ़ी हुई कोयल,
आज भी प्यारे हैं ।

रोक लेता है आज भी गुलमोहर सरे राह,
और भी मीठा मुस्कुराता है अमलतास ।

पिछले दिनों तुम्हारी धराशायी देह,
और फूटते नए कोंवल ।

तुम्हारी महक धंसी फांस की तरह गड़ती है कलेजे में, बहुत
सारे फूल लतर डालियाँ,
यहाँ वहाँ उगी खिली झड़ी ।

तुम ओ पिता !
अपनी छतनार छाया और झूम के साथ,
रह गये मेरी अंतरगुहा में ।

एक पूरा ऊँचा पेड़ खड़ा हो गया है ,
तुम्हारे हदय के ही पास ।

- S.S.